SOCIAL STUDIES

Class 10th

(HISTORY)

Chapter 5: मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

To get notes visit our website

mukutclasses.in

अभ्यास के प्रश्न

संक्षेप में लिखें

प्रश्न 1. निम्नलिखित के कारण दें

(क) वुडब्लॉक प्रिंट या तख्ती की छपाई यूरोप में 1295 के बाद आई।
(ख) मार्टिन लूथर मुद्रण के पक्ष में था और उसने इसकी खुलेआम प्रशंसा की।
(ग) रोमन कैथलिक चर्च ने सोलहवीं सदी के मध्य से प्रतिबंधित किताबों की सूची रखनी शुरू कर दी।
(घ) महात्मा गांधी ने कहा कि स्वराज की लड़ाई दरअसल अभिव्यक्ति, प्रेस और सामूहिकता के लिए लड़ाई है।

उत्तर

(क) वुडब्लॉक प्रिंट या तख्ती की छपाई यूरोप में 1295 ई. के बाद आई क्योंकि

1. 1295 ई० में मार्को पोलो नामक महान खोजी यात्री चीन में काफ़ी साल खोज करने के बाद वापस इटली लौटा।
2. चीन में वुडब्लॉक (काठ की तख्ती) वाली छपाई की तकनीक पहले से ही मौजूद थी।
3. मार्कोपोलो इसका ज्ञान अपने साथ लेकर आया।
4. इसके बाद इटलीवासी भी तख्ती की छपाई से किताबें निकालने लगे और फिर यह तकनीक बाकी यूरोप में फैल गई।
5. इस तरह यूरोप में वुडब्लॉक प्रिंट या तख्ती की छपाई 1295 के बाद ही संभव हो पाई।

(ख) मार्टिन लूथर एक धर्म सुधारक था जिसने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी 95 स्थापनाएँ लिखीं। उनकी किताब की 5,000 प्रतियाँ कुछ ही हफ्तों में बिक गई, और तीन महीने में ही दूसरा संस्करण निकालना पड़ा।वे हमेशा मुद्रण के पक्ष में थे क्योंकि मुद्रण से धर्मसुधार आंदोलन के नए विचारों के प्रसार में मदद मिली। मुद्रण की प्रशंसा करते हुए लूथर ने कहा, "मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफा"

(ग) इटली के एक किसान नेनोकियों ने नई छपी किताबों के आधार पर बाइबिल के नए अर्थ लगाने शुरू कर दिए। ईश्वर और सृष्टि के बारे में ऐसे विचार बनाया कि रोमन कैथोलिक चर्च उनके इस व्यवहार से क्रुद्ध हो गया। ऐसे धर्मविरोधी विचारों को दबाने के लिए रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं पर कई तरह की पाबंदियाँ लगाई और 1558 ई० से प्रतिबंधित किताबों की सूची रखने लगे।

(घ) महात्मा गाँधी ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि अंग्रेजी सरकार प्रेस की आजादी को समाप्त कर रही थी। 1878 में वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट लागू कर दिया था। ब्रिटिश हुकूमत ने स्थानीय अखबारों पर नियमित नजर रखना शुरू कर दिया था। किसी भी रिपोर्ट को बागी करार दिया जाता था। इसलिए गांधी ने कहा कि स्वराज की लड़ाई दरअसल अभिव्यक्ति, प्रेस और सामूहिकता के लिए लड़ाई है।

प्रश्न 2. छोटी टिप्पणी में इनके बारे में बताएँ

(क) गुटेन्बर्ग प्रेस
(ख) छपी किताबों को लेकर इरैस्मस के विचार
(ग) वर्नाक्युलर या देशी प्रेस एक्ट

उत्तर

(क) गुटेन्बर्ग प्रेस:- गुटेन्बर्ग ने रोमन वर्णमाला के तमाम 26 अक्षरों के लिए टाइप बनाए और ऐसी जुगत लगाई कि इन्हें इधर-उधर घुमाकर शब्द बनाए जा सके। लिहाजा इसे 'मूवेबल टाइप प्रिंटिंग मशीन के नाम से जानने लगे। पुरानी तकनीक की तुलना में अब किताबों को छापना तेज हो गया। गुटेन्बर्ग प्रेस एक घंटे में 250 पन्ने छाप सकता था। इसी बुनियादी तकनीक के आधार पर अगले 300 सालों तक छपाई होती रही।

(ख) इरैस्मस एक कैथलिक धर्म सुधारक थे। इरैस्मस छपाई को लेकर बहुत आशंकित था। उन्हें डर था कि छपाई से अच्छे प्रभाव कम होंगे और बुरे प्रभाव ज्यादा फैलेंगे। उसने अपनी पुस्तक एडेजेज़ में लिखा था कि पुस्तकें भिनभिनाती मक्खियों की तरह हैं, दुनिया का कौन-सा कोना है, जहाँ ये नहीं पहुँच जातीं? हो सकता है कि जहाँ-जहाँ एकाध जानने लायक चीजें भी बताएँ, लेकिन इनका ज्यादा हिस्सा तो विद्वता के लिए हानिकारक ही है। बेकार ढेर है क्योंकि अच्छी चीजों की अति भी हानिकारक है, इनसे बचना चाहिए। मुद्रक दुनिया को सिर्फ तुच्छ किताबों से ही नहीं पाट रहे बल्कि बकवास, बेवकूफ़, सनसनीखेज, धर्मविरोधी, अज्ञानी और षड्यंत्रकारी किताबें छापते हैं, और उनकी तादाद ऐसी है कि मूल्यवान साहित्य का मूल्य ही नहीं रह जाता।

(ग) वर्नाक्युलर या देशी प्रेस एक्ट को अंग्रेजी सरकार ने 1878 में लागू किया। यह आईरिस प्रैस कानून के तर्ज पर बनाया गया था। इस एक्ट से ब्रिटिश सरकार को भाषाई प्रेस में छपी रिपोर्ट और संपादकीय को सेंसर करने का हक मिल गया। अगर किसी रपट को बागी करार दिया जाता था तो अखबार को पहले चेतावनी दी जाती थी और अगर चेतावनी की अनसुनी की जाती तो अखबार को जब्त किया जा सकता था और छपाई की मशीनें छीन ली जा सकती थीं। इस प्रकार यह एक्ट प्रेस की स्वतंत्रता को समाप्त करने के लिए लाया गया था।

प्रश्न 3. उन्नीसवीं सदी में भारत में मुद्रण-संस्कृति के प्रसार का इनके लिए क्या मतलब था -
(क) महिलाएँ
(ख) ग़रीब जनता
(ग) सुधारक

उत्तर:-**(क) महिलाएँ**:-

1. महिलाओं की जिंदगी और उनकी भावनाओं पर गहनता से लिखा जाने लगा।
2. मध्यवर्गीय घरों की महिलाएं पहले से ज्यादा पढ़ने लगी।
3. उदारवादी लोग अपने यहाँ औरतों को घर पर पढ़ाने लगे।
4. कई पत्रिकाओं ने लेखिकाओं को भी लिखने का मौका दिया।
5. नारी शिक्षा पर जोर दिया जाने लगा।
6. पत्रिकाओं में छपी पाठ्य सामग्री का इस्तेमाल घर बैठे स्कूली शिक्षा के लिए किया जाने लगा।
7. नारी जीवन से संबंधित उपन्यास, आत्मकथा, जीवन वृत्तांत लिखे जाने लगे।

(ख) गरीब जनता -
1. उन्नीसवीं सदी के मद्रासी शहरों में काफी सस्ती किताबें बिकने लगीं जिन्हें गरीब लोग भी खरीदने में समर्थ थे।
2. शहरों और कस्बों में पुस्तकालय खुलने लगे। कुछेक पुस्तकालय संपन्न गांवों में भी खुलने लगे।
3. उन्नीसवीं सदी के अंत से जाति-भेद के बारे में पुस्तकों व निबंधों में लिखा जाने लगा।
4. कारखानों में मजदूरों पर होने वाले अत्याचार के बारे में लिखा जाने लगा।

(ग) सुधारक -
1. उन्नीसवीं सदी में मुद्रण संस्कृति के प्रसार को समाज सुधारकों ने अपनी आवाज उठाने का साधन बना लिया।
2. ज्योतिबा फुले ने अपनी किताब गुलामगिरी में जातिप्रथा के अत्याचारों पर लिखा।
3. बीसवीं सदी में भीमराव अंबेडकर ने जाति प्रथा पर जोरदार कलम चलाई।

MUKUTclasses

4. मद्रास में ई.वी. रामास्वामी नायर ने न्यायपूर्ण समाज का सपना बुनने की मुहिम में लोकप्रिय पत्र पत्रिकाएँ छापी।
5. कानपुर के मिल मजदूर काशीबाबा ने छोटे बड़े सवाल छापकर जातीय तथा वर्गीय शोषण के बीच रिश्ता समझाने की कोशिश की।

चर्चा करें

प्रश्न 1. अठारहवीं सदी के यूरोप में कुछ लोगों को क्यों ऐसा लगता था कि मुद्रण संस्कृति से निरंकुशवाद का अंत, और ज्ञानोदय होगा?

उत्तर:-

1. अठारहवीं सदी के मध्य तक यह आम विश्वास बन चुका था कि किताबों के जरिए प्रगति और ज्ञानेंदय होता है।
2. कई लोगों का मानना था कि किताबें दुनिया बदल सकती हैं।
3. किताबें ही निरंकुशवाद से समाज को मुक्ति दिलाएँगी।
4. फ्रांस के एक उपन्यासकार लुई सेबेस्तिएँ मर्सिए ने घोषणा की-" छापाखाना प्रगति का सबसे ताकतवर औजार है, इससे बन रही जनमत की आँधी में निरंकुशवाद उड़ जाएगा।"
5. मर्सिए निरंकुशवाद को नष्ट करने तथा ज्ञानोदय लाने में छापेख़ानों की भूमिका के बारे में आश्वस्त थे।

प्रश्न 2. कुछ लोग किताबों की सुलभता को लेकर चिंतित क्यों थे? यूरोप और भारत से एक एक उदाहरण लेकर समझाएँ।

उत्तर कुछ लोग किताबों की सुलभता को लेकर चिंतित इसलिए थे कि उन्हें डर था कि छपने पर नियंत्रण नहीं होगा तो लोगों में बागी और अधार्मिक विचार पैदा होंगे।
उदाहरण के लिए इटली के किसान में नोकिया द्वारा धर्म विरोधी विचार लिखने पर कैथोलिक चर्च उससे क्रुद्ध हो गया था। धर्म अदालत में उसे दो बार पकड़वाया और अंत में उसे मृत्यु की सजा दे दी।
इसी तरह भारत में भी दकियानूसी मुसलमानों का मानना था कि उर्दू के रूमानी अफ़साने पढ़कर औरतें बिगड़ जाएँगी। वहीं परंपरावादी हिंदू मानते थे कि किताबें पढ़ने से कन्याएँ विधवा हो जाएंगी।

प्रश्न 3. उन्नीसवीं सदी में भारत में गरीब जनता पर मुद्रण संस्कृति का क्या असर हुआ?

उत्तर:- 1. उन्नीसवीं सदी के मद्रासी शहरों में काफी सस्ती किताबें बिकने लगीं जिन्हें गरीब लोग भी खरीदने में समर्थ थे।
2. शहरों और कस्बों में पुस्तकालय खुलने लगे। कुछेक पुस्तकालय संपन्न गांवों में भी खुलने लगे।
3. उन्नीसवीं सदी के अंत से जाति-भेद के बारे में पुस्तकों व निबंधों में लिखा जाने लगा।
4. कारखानों में मजदूरों पर होने वाले अत्याचार के बारे में लिखा जाने लगा।
5. बंगलौर के सूती मिल मज़दूरों ने खुद को शिक्षित करने के ख्याल से पुस्तकालय बनाए। इस तरह भारत की गरीब जनता पर भी मुद्रण संस्कृति के प्रसार के व्यापक प्रभाव पड़े।

प्रश्न 4. मुद्रण संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में क्या मदद की?

उत्तर मुद्रण संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में निम्न प्रकार से मदद की।
(i) अंग्रेजों की दमनकारी नीति के बावजूद राष्ट्रवादी अखबार देश के हर कोने मे बढ़ते फैलते गए।
(ii) ये अखबार अंग्रेजों के कुशासन की रिपोर्टिंग करते रहे ।
(iii) इन्होंने राष्ट्रवादी ताकतों की हौसला अफजाई जारी रखी।
(iv) पंजाब के क्रांतिकारियों को काला पानी भेजा गया तो बाल गंगाधर तिलक ने अपना केसरी समाचार छापा तथा लोगों ने गहरी हमदर्दी जताई।
(v) इस कारण बाल गंगाधर तिलक को कैद कर लिया गया जिसका पूरे भारत मे विरोध हुआ ।